Raga of the Month November 2026 Raga PurvaKalyan and PooriaKalyan
राग पूर्वकल्याण और पूरियाकल्याण

राग पूर्वकल्याण और पूरियाकल्याण ये दोनों अल्पप्रचलित राग है। क्रमिक पुस्तक मालिका के छठे भागमे और आचार्य श्री ना. रातंजनकरजी के संगीत परिभाषा विवेचन इस किताबमे राग पूर्वकल्याण का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है। १९३४ में कर्नाटक संगीतके पूर्वकल्याणी इस रागका रूपांतर हिन्दुस्तानी संगीतमे रागांगकी संकल्पनाको ध्यानमे रखते हुए आचार्य श्री. ना. रातंजनकरजीने "पूर्वकल्याण" इस नामसे किया है। । राग पुर्वकल्याण और राग पूरियाकल्याण के इतिहास के बारेमे पं. के जी गिंडेजी ने "परमेल प्रवेशक राग " इस विषयपर निर्मित लेक्चर डेमोंस्ट्रेशनमे जानकारी दी है। पूर्वकल्याण यह राग मारवा और कल्याणके संयोगसे बना है। यह राग सम्पूर्ण है, उसका वादी रिषभ और संवादी धैवत है। आरोहमे निषाद वक्र और अवरोहमे पंचमको दुर्बल रखनेसे राग स्वरूप अधिक स्पष्ट होता है। रागका गानसमय संध्या-काल है। पूर्वी और मारवा थाटके रागोंके पश्चात और कल्याण थाटके रागोंके पहले गाये जानेवाला राग, "पूर्वकल्याण" इस अर्थसे उसे परमेलप्रवेशक राग माना जाता है। संक्षेपमे ऐसा कह सकते हैं की इस रागका विस्तार इसे कोमल रिषभका कल्याण ऐसा मानकर करना होगा।

पूर्व कल्याण रागका साधारण स्वरूप और विशेष स्वर संगतियाँ इस प्रकार है।

आरोह- सा रे, ग मं प, ध, नि ध सां । अवरोह - सां नि ध प, मं ग, रे सा।

सा, रेऩि रे सा, रेऩि रे ऩि ध़, ध़ ऩि रे ग मं प, रे, पमं प ध मं, ग, रे सा ; ऩि रे ऩि ध़ , रेऩि रे ग मं प, मं ध ग प, ध मं ग, नि नि ध मं ग रे सा; ध़ ऩि रे ग, रे, ग मं प, मं ध, मं ध नि प, ध, मं ग, प, रे रेग, नि ध मं ग, रे सा

अब हम पूरियाकल्याण राग का परिचय देख लेंगे। नाममे समानता होनेके कारन कभी कभी गलतीसे रागका स्वरूप समझनेमे विद्यार्थिओंकी ग़लतफ़हमी हो सकती है। पूरियाकल्याण रागमे पूरिया और कल्याण रागोंका मिश्रण है। राग पूरियाकल्याण की जानकारी पंडित रामाश्रेय झा जी के किताब "अभिनव गीतांजली " के भाग १ में दी है। रागका वादी गंधार और संवादी निषाद है। पूर्वाङ्गमे पूरिया का मिश्रण होने के कारण षडज का बारबार लंघन होता है।

आरोह- ऩि रे ग, मं ध नि सां । अवरोह – सां, नि ध प, मं ग, रे सा।

मुख्य स्वर- ऩि रे ग, मं ध प, मं ग, रे ग रे मं ग, रे सा ।

आजके ऑडियोमें हम आचार्य श्री. ना. रातंजनकरजी रचित राग पूर्वकल्याण की विलम्बित और द्रुत रचना सुनेंगे, जो उनके शिष्य पंडित के. जी. गिंडेजीने गायी हुई है। उसके पश्चात पं भीमसेन जोशीजी ने गाया हुआ राग पूरियाकल्याण का अंश सुनेंगे।

संदर्भ : "क्रमिक पुस्तक मालिका" भाग ६; "अभिनव गीतांजली " भाग १, संगीत परिभाषा विवेचन"

आभार : पंडित यशवंतबुवा महाले.

1-11-2026

Link to the list of 190+ Raga of the month articles -

@ Archive of ROTM Articles - http://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx